RAJKIYA SNATKOTTAR MAHAVIDYALAYA, LAKSAR, HARIDWAR, UTTARAKHAND
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लक्सर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
E-mail: gpgclaksar@gmail.com, gdclaksar2001@rediffmail.com
Phone: 9412409074

3.3.2 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five year

Sl. No.	Category	Name of the teacher	Title of the paper/chapters published	Title of the book	Calendar Year of publication	ISBN number of the proceeding	Name of the publisher
				2021 – 2022			
1	BOOK CHAPTER/ PAPER	**Dr. Kanupriya**	कोरोना महामारी के आथिक– सामाजिक प्रभाव	कोरोना का सामाजिक आथिक प्रभाव	2022	978-93-93112-05-7	Pragtisheel Prakashan
2	BOOK	Dr. Kanupriya (Editor)		कोरोना का सामाजिक आथिक प्रभाव	2022	978-93-93112-05-7	Pragtisheel Prakashan
				2020 – 2021			
1	BOOK	**Dr. Anjani Prasad Dubey & Dr. Kanupriya (Editor)**		Ganga- The Backbone of the Aquatic Ecosystem of Northern India	2021	978-81-947207-3-7	Well Press Publication
2	BOOK CHAPTER/ PAPER	Dr. Anjani Prasad Dubey	नदी जल प्रदूषण और स्वच्छता कार्यक्रमः गंगा के विशेष सन्दर्भ में	Ganga- The Backbone of the Aquatic Ecosystem of Northern India	2021	978-81-947207-3-7	Well Press Publication
3	BOOK CHAPTER/ PAPER	Dr. Kanupriya	गंगा नदी का आर्थिक महत्वः हरिद्वार के धार्मिक पर्यटन के सम्बन्ध में	Ganga- The Backbone of the Aquatic Ecosystem of Northern India	2021	978-81-947207-3-7	Well Press Publication
4	BOOK CHAPTER/ PAPER	Dr. Ashootosh Sharan	Effects of Anthropogenic Activity on Biodiversity	Ganga- The Backbone of the Aquatic Ecosystem of Northern India	2021	978-81-947207-3-7	Well Press Publication

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

RAJKIYA SNATKOTTAR MAHAVIDYALAYA, LAKSAR, HARIDWAR, UTTARAKHAND
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लक्सर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
E-mail: gpgclaksar@gmail.com, gdclaksar2001@rediffmail.com
Phone: 9412409074

				2019 – 2020			
1	BOOK	Dr. Kanupriya (Editor)		आर्थिक विचारों का इतिहास	2020	978-93-88165-61-7(pb)	समय साक्ष्य
2	BOOK CHAPTER/ PAPER	Dr. Anjani Prasad Dubey	ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण में कौशल विकास की सुविधा	समकालीन परिदृश्य में ग्रामीण विकास	2020	978-81-947766-3-5	Kumud Publication
3	BOOK CHAPTER/ PAPER	Dr. Kanupriya	ग्रामीण भारत में नवाचार के प्रयोग में डिजिटल इंडिया की भूमिका	समकालीन परिदृश्य में ग्रामीण विकास	2020	978-81-947766-3-5	Kumud Publication
				2018 – 2019			
1	BOOK CHAPTER/ PAPER	Dr. Ashootosh Sharan	Macaulay, The social Egalitarian and His IPC	Society and Culture of India Through the ages	2019	978-81-942233-7-5	Radha publication
2	BOOK CHAPTER/ PAPER	Dr. Ashootosh Sharan	Early Medieval Haridwar	वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं तथा समाधान	2019	978-81-935727-6-4	Dhani Publication
				2017 – 2018			
				0			

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

2021-22

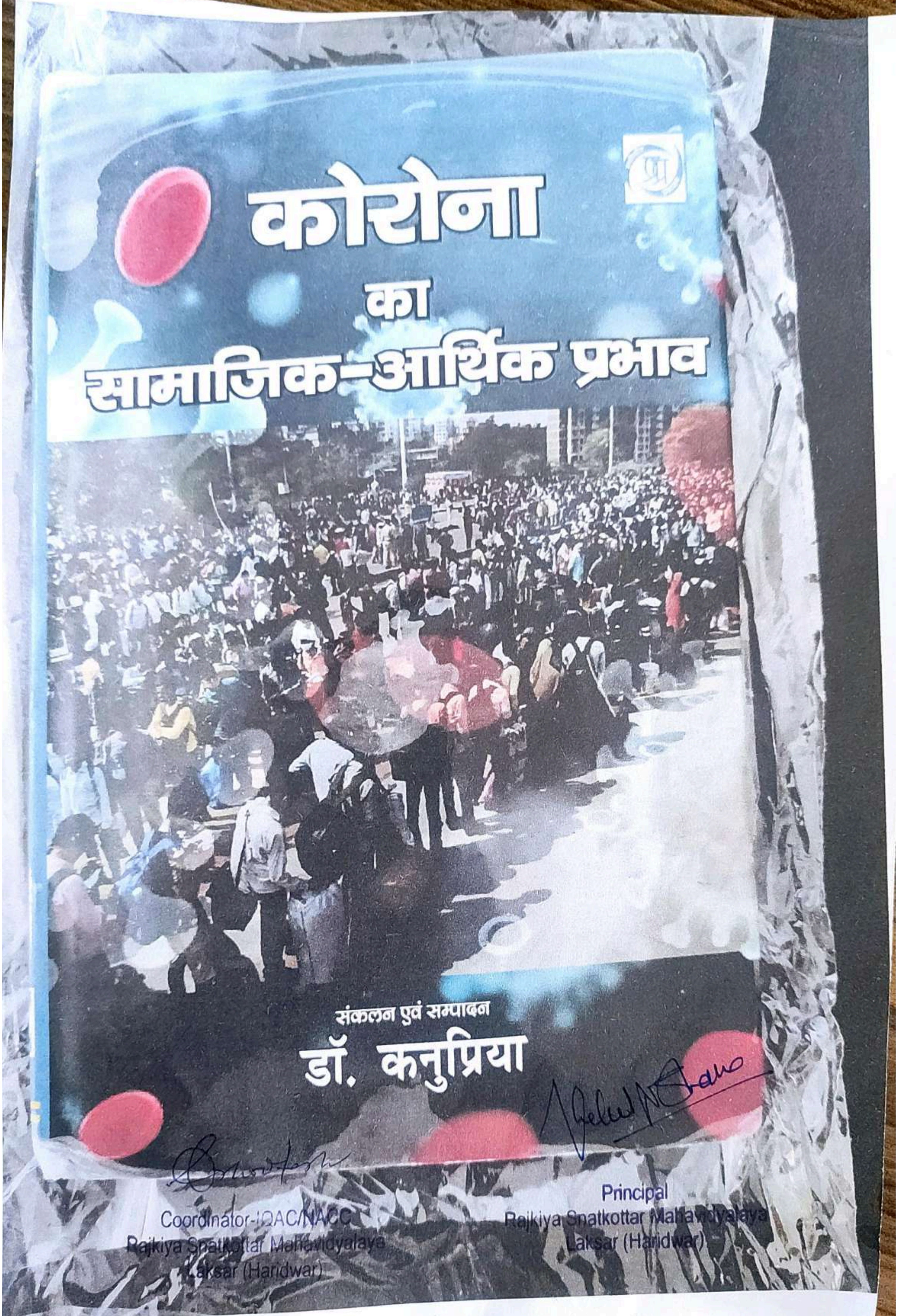

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

कोरोना

का

आर्थिक-सामाजिक प्रभाव

संकलन एवं सम्पादन

डॉ० कनुप्रिया

प्रगतिशील प्रकाशन

नई दिल्ली (भारत)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

पुस्तक परिचय

कोरोना महामारी ने मनुष्य जीवन के प्रत्येक पहलू को कल्पनातीत स्तर पर प्रभावित किया है और इसके प्रभावों का क्रम लगातार भी जारी है। जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जो इस महामारी के प्रभाव से अछूता रहा हो। इस महामारी ने सामाजिक संरचना, आर्थिक ढांचे, शैक्षिक परिवेश और निजी जीवन के प्रत्येक पहलू को बड़ी हद तक बदल कर रख दिया। महामारी के कारण हुए परिवर्तनों पर दुनिया भर में अध्ययन, तथ्य, संकलन और दस्तावेजीकरण का कार्य चल रहा है, क्योंकि इसके शुरू होने के दो साल बाद भी दुनिया के कई हिस्सों में महामारी का प्रभाव मौजूद है, इसलिए शोध एवं दस्तावेजीकरण के किसी कार्य को अंतिम नहीं कहा जा सकता। फिर भी, यह पुस्तक कोरोना महामारी से संबंधित जानकारी / शोध की एक महत्त्वपूर्ण सामग्री के रूप में देखी जा सकती है।

डॉ. कनुप्रिया
सहायक प्रोफेसर (अर्थशास्त्र),
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लक्सर, हरिद्वार, उत्तराखंड

उत्तराखंड राज्य के विभिन्न महाविद्यालयों मे अर्थशास्त्र विषय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओ में 20 वर्षों से अधिक का अध्यापन अनुभव। वर्ष 2010 से राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लक्सर हरिद्वार में कार्यरत। 4 पुस्तकें एवं राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 10 से अधिक शोध पत्रों का प्रकाशन।

शिक्षा– एम.ए. (स्वर्ण पदक), डी.फिल.

E-mail: kanupriya-virmani@gmail-com

Price: ₹ 795.00
ISBN: 978-93-93112-05-7

प्रगतिशील प्रकाशन
एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59
ई-मेल: pragatisheelprakashan@yahoo.in
चलभाष: +91-9968277749

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

इस पुस्तक में दी गई सामग्री एवं व्यक्त विचारों के मौलिकता का दायित्व पूर्णतः लेखक/लेखिका/सम्पादक/सम्पादिका/संकलनकर्ता/संकलनकर्ती का है तथा किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-93112-05-7

प्रकाशक-

प्रगतिशील प्रकाशन

एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,

उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)

चलभाष : +91-9968277749

ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

कोरोना का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

मूल्य : ₹ 795.00

प्रथम संस्करण : 2022

© सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक का किसी भी रूप में प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मुद्रण, वितरण एवं पुनः प्रकाशन करना दण्डनीय अपराध है, तथा ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित। एस० के० ग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

अपनी बात

कोरोना महामारी ने मनुष्य जीवन के प्रत्येक पहलू को कल्पनातीत स्तर पर प्रभावित किया है और इसके प्रभावों का क्रम आज भी जारी है। जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जो इस महामारी के प्रभाव से अछूता रहा हो। इस महामारी ने सामाजिक संरचना, आर्थिक ढांचे, शैक्षिक परिवेश और निजी जीवन के प्रत्येक पहलू को बड़ी हद तक बदल कर रख दिया। कोरोना महामारी के कारण हुए परिवर्तनों पर दुनिया भर में अध्ययन, तथ्य, संकलन और दस्तावेजीकरण का कार्य चल रहा है, चूंकि अभी भी दुनिया के कई हिस्सों में महामारी का प्रभाव मौजूद है, इसलिए शोध एवं दस्तावेजीकरण के किसी कार्य को अंतिम नहीं कहा जा सकता। यह पुस्तक कोरोना महामारी से संबंधित सूचनाओं और शोध की एक प्रारंभिक सामग्री के रूप में देखी जा सकती है।

यह अब स्थापित तथ्य है कि इस महामारी से वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गंभीर व नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। आर्थिक रूप से हुआ नुकसान इतना बड़ा है कि उसे अभी तक पूरी तरह आंका नहीं जा सका है। कोरोना से बचाव के लिए लगाए गए लॉकडाउन और अन्य सख्त पाबन्दियों से विश्व अर्थव्यवस्था को बेहद तेज़ और भारी झटका लगा है, जिससे दुनिया भर में गम्भीर आर्थिक संकट पैदा हुआ। विश्व बैंक के अनुसार, मौजूदा दौर दूसरे विश्व युद्ध के बाद अब तक की सबसे गहरी आर्थिक मन्दी का समय है। विश्व का कोई भी देश इस महामारी के प्रभावों से अछूता नहीं है।

इस पुस्तक के जरिये महामारी के प्रभावों को व्यापक धरातल पर देखने का प्रयास किया गया है। विशेष रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभाव और उससे पैदा होने वाली सामाजिक स्थितियों से संबंधित विभिन्न शोध लेख इस किताब में शामिल किए गए हैं। साथ ही, महामारी से प्रभावित विकसित तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के विभिन्न क्षेत्रों पर कोरोना का आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव कितना तथा किस रूप में पड़ा, यह देखने का भी प्रयास किया गया है। स्त्रियों पर घरेलू हिंसा से

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

संबंधित घटनाएं, छात्र-छात्राओं की शिक्षा पर पड़ने वाला प्रभाव, कृषि, उद्योग तथा सेवा क्षेत्र की गति, श्रमिकों का पलायन, बेरोजगारी आदि जैसे बड़े मुद्दे भी विभिन्न लेखों के माध्यम से उठाए गए हैं। इसके अलावा, महामारी की चुनौती से पार पाने की जद्दोजहद और फिर एक नए रूप में जीवन की शुरुआत की चुनौतियों से जुड़े विषयों पर चर्चा कर इन समस्याओं का हल देखने की भी कोशिश भी की गई है।

इस पुस्तक के लेखन की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन करने के लिए मैं अपने आदरणीय पिता डॉ. राम स्वरूप विरमानी (सेवानिवृत्त प्राचार्य) का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। वे अपनी अध्यवसायी प्रवृत्ति और बौद्धिक कौशल से सदैव प्रेरित करते हैं। मेरी माँ रमा विरमानी और परिवारजनों के बहुमूल्य सहयोग के बिना यह कार्य वास्तव में कठिन होता।

पुस्तक के प्रकाशक प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली की भागीदारी और समर्थन, दोनों महत्वपूर्ण थे। मैं, अपने प्रकाशक की आभारी हूँ, जिन्होंने परिश्रम एवं उत्साह के साथ पुस्तक को प्रकाशित किया। जिन शिक्षाविदों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं और पत्रकारों ने अपने लेख भेजे, उन्हें साधुवाद।

मैं, अपने प्राचार्य डॉ. वी.एन. शर्मा के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूं। उनके मार्गदर्शन तथा परामर्श के बिना यह कार्य सरल नहीं था।

आप सभी के प्रति एक बार पुन: आभार और कृतज्ञता। सभी पाठकों की राय और टिप्पणियों का सदैव स्वागत है।

डॉ० कनुप्रिया

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

विषय-सूची

भूमिका (V)

अपनी बात (VII)

1. कोरोना महामारी के आर्थिक-सामाजिक प्रभाव 1
—डॉ० कनुप्रिया

2. भारत में कोरोना : आपदा और अवसर 12
—डॉ० राम स्वरूप विरमानी

3. कोरोना काल में सोशल मीडिया की भूमिका 18
—डॉ० राखी उपाध्याय

4. ईमान को लील गया कोरोना 27
—डॉ० सुभाष गुप्ता

5. कोविड-19 का महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर प्रभाव 32
—डॉ० शिखा जैन

6. हरिद्वार कुंभ और कोरोना का प्रभाव 41
—डॉ० योगेश योगी

7. कोरोना महामारी का पर्यटन पर प्रभाव 47
—डॉ० सीमा गुप्ता

8. पलायन और महामारी- एक पुनर्मूल्यांकन 52
—डॉ० चंद्रकांत तिवारी

9. ऑनलाइन शिक्षा, समस्याएँ एवं उपाय 57
— डॉ० धनंजय शर्मा

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

1

कोरोना महामारी के आर्थिक-सामाजिक प्रभाव

डॉ० कनुप्रिया

कोविड-19 की छाया ने देश दुनिया को बहुत तेजी से बदला है। इस बदलाव की गति इतनी तेज रही कि इसकी तुलना शायद ही अतीत में हुए किसी बदलाव की गति से की जा सकती है। जिंदगी का कोई भी पहलू इस बदलाव से अछूता नहीं रहा। कोविड-19 ने मनुष्य की सीमाओं को नए सिरे से परिभाषित किया और उसके इस भ्रम को भी दूर किया कि उसके पास हर समस्या का समाधान मौजूद है। इस महामारी ने विगत दो वर्षों में दशकों पुराने नियम तथा तौर-तरीके ना केवल बदले, बल्कि आर्थिक-सामाजिक जीवन को बड़े स्तर पर भी बदलकर रख दिया। विगत सदियों में जब भी महामारियां फैली हैं तो उनका ऐसा वैश्विक प्रभाव देखने को कभी नहीं मिला। कोविड-19 महामारी ने संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव डाला है। बीबीसी के एक अध्ययन के मुताबिक विश्व की कुल जीडीपी में लगभग साढ़े चार फीसद की गिरावट आई है, जो 1930 की विश्वव्यापी महामंदी के बाद का सबसे गंभीर संकट है। भारत में इसका सर्वाधिक नकारात्मक प्रभाव व्यापक बेरोजगारी के रूप में सामने आया है और देश को आजादी के बाद दूसरी सबसे बड़ी बेरोजगारी का सामना करना पड़ा है।

वर्ष 2020 और 2021 में पूरी मानवता ने ऐसी महामारी का सामना किया

* सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महविद्यालय लक्सर, हरिद्वार, उत्तराखंड

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

2020-21

गंगा || GANGA

उत्तर भारत के जलीय पारिस्थितिकी तंत्र की मेरुदण्ड
The Backbone of the Aquatic Ecosystem of Northen India

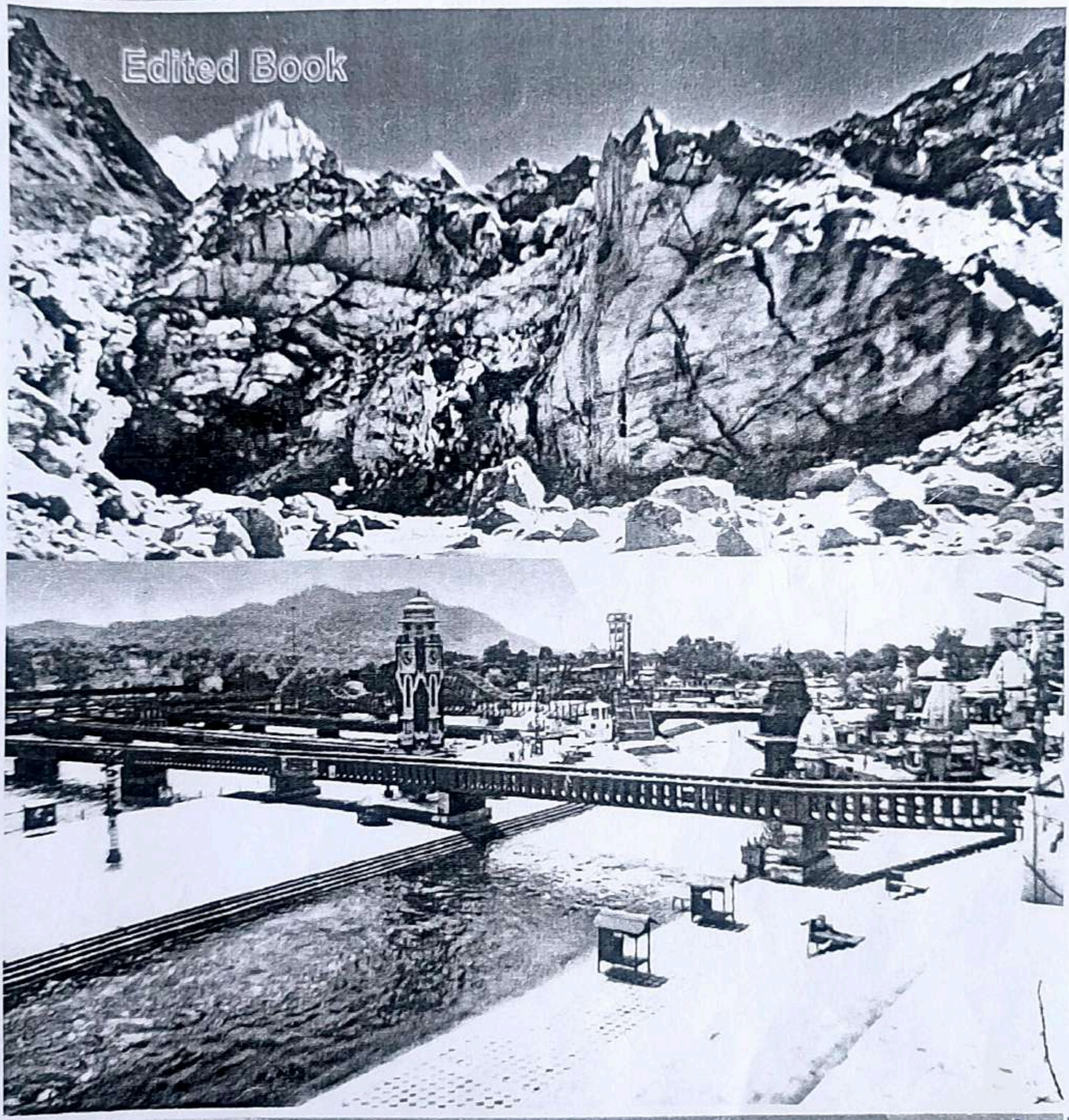

Dr. Anjani Prasad Dubey
Dr. Kanupriya

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

[redacted]

गंगा
[उत्तर भारत के जलीय पारिस्थितिकी तंत्र की मेरुदण्ड]

GANGA
[The Backbone of the Aquatic Ecosystem of Northen India]

ISBN : 978-81-947207-3-7

Publication : 15 October, 2021

Edition : First, 2021

Editor : Dr. Anjani Prasad Dubey
Co-editor : Dr. Kanupriya

© 2021

The views and ideas expressed in this book are the exclusive opinions of the authors and has nothing to do with the opinions of Well Press Publications. Publisher, Well Press Publications do not own any responsibility. Authors are liable for any copyright clearance, Factual inaccuracies and views expressed in their papers. All Subjects to Roorkee jurisdiction only.

Cover Image : Google Search / Courtesy

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without permission in writing form the publishers.

Published by:
Well Press Publications
787, Lane 9, East Shiv Puram, Roorkee - 247667
Distt.-Haridwar [Uttarakhand], INDIA
website : www.wellpress.in, www.recentjournals.in
email : ritesh.rke@gmail.com
Contact : +91-9412999793, +91-9319056411

Typeset by
Shiv Computer & Printers, Roorkee

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

भूमिका
गंगे रक्षति रक्षित:

त्रिपथ गामिनी 'गंगा' मनुष्यों को भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार के सुखों से अभिसिंचित करती है। वैदिक ग्रंथों के अनुसार गंगा की उत्पत्ति ही मोक्ष प्रदान करने के लिए हुयी है। भागीरथ सागर पुत्रों की मुक्ति के लिए ही विष्णुपदा को पृथ्वी पर ले आये। गंगा घाटी में देश की 45 प्रतिशत से अधिक आबादी निवास करती है। 'गंगा' हमारे देश की पेयजल, स्वास्थ्य, ऊर्जा, खाद्यान्न, सिंचाई, पर्यटन, रोजगार तथा पारिस्थितिकी की मेरूदण्ड है। परन्तु नदी घाटियों में बढ़ते मानवीय अतिक्रमण तथा बडी मात्रा में प्रदूषकों को नदियों में डालने की व्यवस्था ने आज गंगा के अस्तित्व के साथ जलीय चक्र तथा पूरी गंगा घाटी के पारिस्थितिकी तंत्र को असंतुलित कर दिया है। जिसका दुष्प्रभाव जलीय जीवों तथा वनस्पतियों के साथ ही, कृषि क्षेत्रों, पशु–पक्षियों मानव तथा भू–जल की गुणवत्ता पर पड़ रहा है।

गंगा को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए अनेकों सरकारी तथा गैर सरकारी प्रयास निरन्तर किए गये है। परन्तु देश की यह 'जीवन धारा' आज भी संकट में है।

गंगा की स्वच्छता के लिए जुलाई 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी ने एक व्यापक कार्य योजना राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) 'नमामि गंगे' की शुरूआत की। 20000 करोड़ रुपये की यह परियोजना 18 वर्ष में पूरी की जानी है।

नमामि गंगे परियोजना में गंगा तथा उसकी सहायक नदियों में प्रदूषित जल प्रवाह को रोकने के उपायो के साथ ही गंगा स्वच्छता के लिए जन–जागरूकता तथा आम–जन की भागीदारी को सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया जा रहा है। गंगा स्वच्छता तथा जल प्रदूषण के विषय में विद्वतजनों के विचारों को संकलित करके प्रस्तुत करने की योजना इस पुस्तक के रूप में मूर्तरूप ले रही है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में राज्य परियोजना प्रबन्धन ग्रुप, नमामि गंगे देहरादून, उत्तराखण्ड का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही पुस्तक को पाठकों तक पहुंचाने में वैल प्रैस पब्लिकेशन्स से श्री रितेश कुमार के सहयोग के लिए हम उनका आभार व्यक्त करते है।

सम्पादक
डा0 अंजनी प्रसाद दूबे

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Contents

Sl.	Chapters Title	Page

खण्ड–1 (हिन्दी अनुभाग)

1. नदी जल प्रदूषण और स्वच्छता कार्यक्रम : गंगा के विशेष सन्दर्भ में
अंजनी प्रसाद दूबे 2

2. गंगा घाटी की जैव विविधता : चुनौतियाँ एवं निदान
छाया चतुर्वेदी 12

3. गंगा के धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक आयाम
राम स्वरूप विरमानी 19

4. गंगा नदी का आर्थिक महत्व : हरिद्वार के धार्मिक पर्यटन के संदर्भ में
कनुप्रिया 29

5. गंगा जल प्रदूषण तथा जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को चुनौतियाँ
आदित्य प्रकाश दुबे एवं अनुपमा सिंह 38

6. उत्तर भारत की जीवन रेखा गंगा नदी पर नगरीकरण और औद्योगिकीकरण का प्रभाव
नीमा भेतवाल 46

7. जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण अवनयन (हरिद्वार जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन)
कवलजीत कौर एवं मनोज कुमार 54

8 उत्तराखण्ड में स्वच्छ गंगा कार्यक्रम
प्रियंका गुप्ता 64

9 फैजाबाद मण्ड़ल के जनपद फैजाबाद (अयोध्या) में भूमिगत जल का क्षेत्रीय वितरण एवं उपयोग
शिवमूर्ति कन्नौजिया 78

10 उत्तर भारत की जीवन रेखा पर नगरीकरण एंव औद्योगीकरण का प्रभाव
अतुल कुमार दुबे 84

11 उत्तर भारत की जीवन रेखा गंगा पर नगरीकरण और औद्योगिकरण का प्रभाव
पुरुषोत्तम सं. माहोरे 90

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

विषय सूची

क्र0	शीर्षक	पृष्ठ सं0
12	गंगा के क्षेत्र में जल विद्यूत परियोजनाओं एवं जनसंख्या दबाव से बढ़ता प्रदूषण *मुरली सिंह एव अतुल कुमार दुबे*	99
13	गंगा नदी की जैव विविधता में गांगेय डॉल्फिन का महत्त्व *सरला शुक्ला*	111
14	उत्तर–प्रदेश (कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी) मे वृद्धिमान गंगा प्रदूषण का एक परिदृश *अजीतराव एवं श्रेया पाण्डेय*	125
15	नदियो में बढ़ता प्रदूषण एक समस्या *जे0 पी0 त्यागी एवं पूजा शाह*	133
16.	गंगा एवं पर्यटन *प्रिया प्रधान*	143

Section II (English)

15.	Towards a Healthy Ganga-Improving River Flows Through Understanding Trade Offs *Pintu N. Pastagiya & Amit K. Godhani*	155
16.	Effects of Urbanization on Ganga, The Life Line of North India *Hijab Mujib*	185
17	Education as Panacea of Population Explosion *Nibedita Priyadarshani*	195
18	A Study On the Causes and Impact of River Pollution in India *Om Prakash Purohit & Gautamkumar P. Kanani*	207
19	An Article on Ganga Pollution *Sarla Bhardwaj*	215
20.	Effects of Anthropogenic Activity on Biodiversity *Ashootosh Sharan*	22[illegible]

*** ***

Coordinator IQAC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

नदी जल प्रदूषण और स्वच्छता कार्यक्रम : गंगा के विशेष सन्दर्भ में

अंजनी प्रसाद दूबे
एसोसिएट प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय,
लक्सर, जनपद हरिद्वार

शोध सार :

भारत की संस्कृति, धर्म और आध्यात्म का प्रवाहित स्वरूप 'गंगा' आदि काल से हमारी आस्था और अर्थतंत्र का आधार रही है। गंगा केवल गोमुख से गंगा सागर तक के क्षेत्रफल में ही सीमित नहीं है। अपितु देश के कोने–कोने में गंगा जल मोक्षदायी साधन के रूप में सरंक्षित किया जाता रहा है। गंगा के इस महात्म्य के बावजूद बढ़ती आबादी इसकी, खाद्यान्न एवं ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति, धार्मिक अनुष्ठानों, नगरीकरण एवं औद्योगीकरण के प्रसार एवं इनसे होने वाले प्रदूषणों के कारण गंगा में प्रदूषण का स्तर बढ़ता ही जा रहा है। विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास गंगा को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए किए गये है और नमामि गंगे जैसी व्यापक परियोजना अभी संचालित हो रही है। इसके बावजूद जन–सामान्य को गंगा की निर्मलता के बारे में व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए अपने कार्य व्यवहार में बदलाव लाकर गंगा स्वच्छता के लक्ष्य को पूरा किया जाना सम्भव है।

मुख्य बिंदु: गंगा स्वच्छता, प्रदूषण एवं सरकारी योजनानाएं।

जिस तत्व से जीवन की उत्पत्ति हुयी और जिस पर जीवधारियों का अस्तित्व आश्रित है ऐसे जल तत्व के बारे में ऋग्वेद में कहा गया है–'सलिलम्सर्व सर्व मा इदम्' ऋग्वेद के सूत्र 18.82.06 में उल्लेख है कि जल में सभी तत्वों का समावेश है। जल में सभी देवताओं का वास है जल से ही पूरी सृष्टि सभी चर और अचर जगत की उत्पत्ति हुई है। हमारी पृथ्वी पर मानव सभ्यताओं और

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

गंगा नदी का आर्थिक महत्व : हरिद्वार के धार्मिक पर्यटन के संदर्भ में

कनुप्रिया
असिस्टेंट प्रोफेसर 'अर्थशास्त्र'
राजकीय महविद्यालय, लक्सर, हरिद्वार

शोध सारः

भारत में नदियों को एक जीवंत इकाई माना जाता है क्योंकि नदियाँ भारत की धार्मिक तथा सांस्कृतिक विरासत ही नहीं अपितु आर्थिक तंत्र मे भी अंतर्निहित है। देश की सभी नदियों मे सबसे बड़ी व धार्मिक दृष्टि से सबसे प्रमुख नदी है–"गंगा"। मोक्षदायिनी गंगा को उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था का मेरुदंड भी माना जाता है। भारत का करीब 47 प्रतिशत उपजाऊ क्षेत्र गंगा बेसिन में है तथा लगभग चालीस करोड़ लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार या आजीविका के लिए गंगा पर निर्भर करते हैं, विशेषकर सिंचाई, उद्योगों के लिए पानी की उपलब्धता, मत्स्य व्यापार, गंगा आरती, पुरोहित, रिवर राफ्टिंग, टुरिस्ट गाइड, पर्यटन, मूर्ति एवं कुम्हार व्यवसाय हेतु मिट्टी, विद्युत उत्पादन आदि के लिए। हिन्दू धर्म में पवित्र नदी गंगा को देवी गंगा के रूप मे मान्यता प्राप्त है। गंगा का आरंभ उत्तराखंड के देवप्रयाग में अलकनंदा एवं भागीरथी के संगम के बाद संयुक्त धारा के रूप मे होता है। अनादि काल से गंगा नदी को संपूर्ण देश में पूजा जाता रहा है। उत्तराखंड के गौमुख से लेकर पश्चिम बंगाल में गंगा सागर तक 2525 किलोमीटर के लंबे सफर को तय करने वाली गंगा एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जो न केवल पारिस्थितिकी, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व रखती है वरन इसका सर्वाधिक महत्व आर्थिक रूप में भी देखने को मिलता है। यह भारत की एक बड़ी जनसंख्या के आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन भी है और राष्ट्रीय आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी। गंगा भारत के आर्थिक तंत्र का एक महत्वपूर्ण भाग है जो खेती, व्यापार, विद्युत, पर्यटन,

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Effects of Anthropogenic Activity on Biodiversity

Ashootosh Sharan
Associate Professor of History,
Government Degree College, Laksar (Haridwar)

Abstract:

Biodiversity has been a part of nature since inception of life. All flora and fauna have been its part. Apart from nature, humans were first to usher the force of natural selection on the organisms. Humans also have been the first who were driven in their actions to secure future security. With the advent of agriculture, age of monoculture too arrived. I don't mean to say that only one crop was produced. But crops suitable for human consumption began to occupy a disproportionately large part of land. It was first major attack on biodiversity. Habitation settlements and agricultural fields began to limit the scope of biodiversity. With the growth of population and industrialisation, the challenge on biodiversity became more severe. The trend continues. There is incessant appetite for the growth of the GDP and per capita income. Developed and developing countries cherish entirely different philosophies to preserve biodiversity. So, in modern geological times, the biodiversity survival is grossly subservient to anthropogenic activity only.

Key Words: Anthropogenic Activity & Biodiversity

Earth's biosphere comprises complex collections of innumerable organisms which is simply known as

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

2019-20

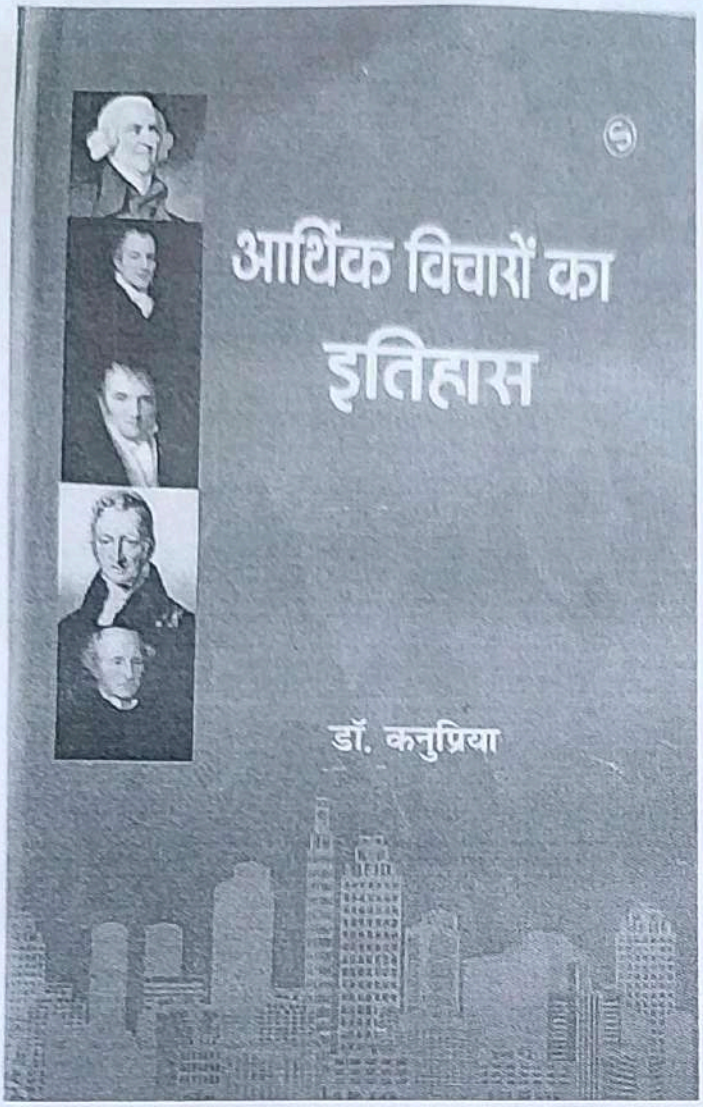

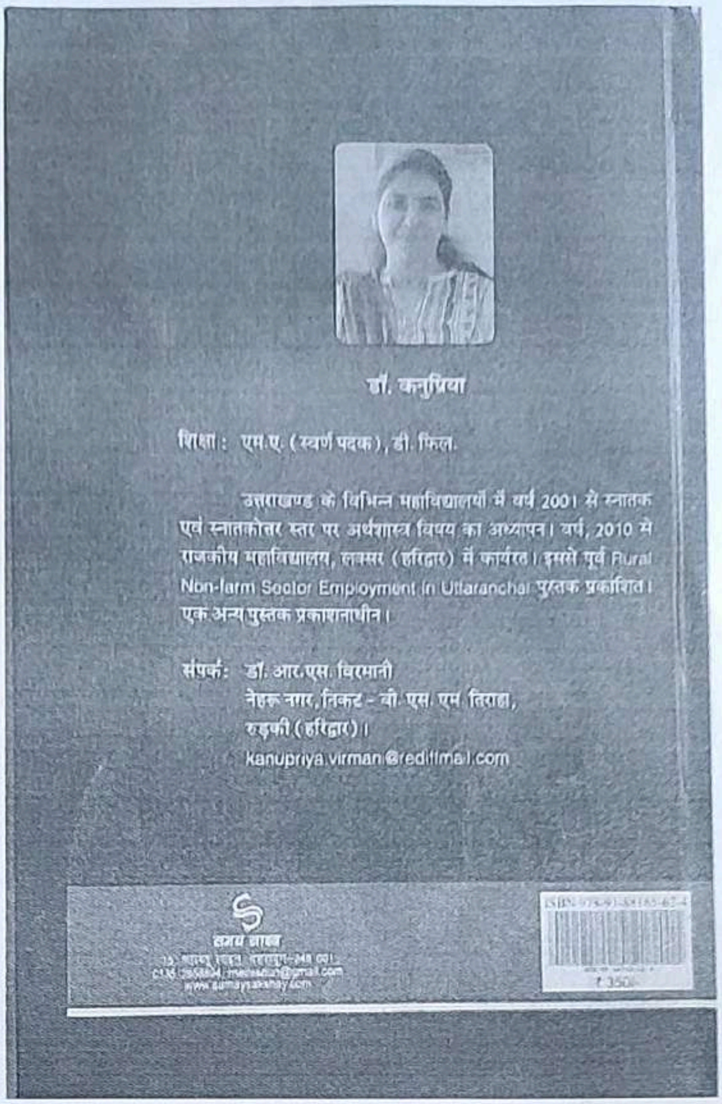

Coordinator IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

प्रकाशक एवं मुद्रक
समय साक्ष्य
15 फालतू लाइन, देहरादून-248001
दूरभाष: 0135-2658894
email: mailssdun@gmail.com
web: samaysakshay.com

संस्करण
प्रथम, 2020

कवर डिजायन
मनेन्द्र कक्कड़

मूल्य
जन संस्करण : 275/-
पुस्तकालय संस्करण : 350/-

ISBN:
978-93-88165-61-7 (PB)
978-93-88165-62-4 (HB)

© डॉ. कनुप्रिया

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

अपनी बात

विगत वर्षों में अर्थशास्त्र विषय के अध्यापन के समय मुझे बार-बार यह लगता रहा है कि 'आर्थिक विचारों का इतिहास' विषय पर अनेक किताबें होने के बावजूद एक ऐसी किताब की कमी अब भी है जो वास्तव में छात्रों को केंद्रित करके लिखी गई। साथ ही जिसे छात्र-छात्राएं आसानी से समझ सकें और अंतर्निहित भाव को ग्रहण कर सकें।

अध्ययन एवं अध्यापन काल के दौरान बनाए गए अपने नोट्स को संकलित-संग्रहित करने का लोभ हर किसी के मन के किसी कोने में दबा रहता है। इसी क्रम में विचार आया कि इन नोट्स को किताब के रूप में प्रकाशित कराया जाए। इनमें क्या-कुछ और बेहतर हो सकता है, इस पर विमर्श के लिए एक दिन अपने शिक्षक प्रो. आर.सी. भटनागर के पास जाना हुआ तो उन्होंने वह सामग्री सामने रख दी, जिससे वे तीन दशक से भी अधिक समय तक अपने छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन करते रहे हैं। इस सामग्री में इसलिए कोई बड़ा बदलाव अपेक्षित नहीं रहा क्योंकि 'आर्थिक विचारों का इतिहास' के तथ्यों, कथ्यों और व्याख्याओं में कोई युगान्तरकारी परिवर्तन नहीं हुआ।

आर्थिक विचारों और उनके इतिहास पर अंग्रेजी में किताबों की कमी नहीं है, लेकिन हिन्दी माध्यम के छात्र-छात्राओं को अब भी स्तरीय सामग्री के अभाव का सामना करना पड़ता है। इसका बड़ा नुकसान यह है कि छात्र गंभीर और स्तरीय सामग्री से विमुख हो जाते हैं और अन्तत: अर्थशास्त्र से ही उनका मोहभंग हो जाता है। ऐसी उम्मीद करना गलत नहीं है कि यह पुस्तक उस कमी को पूरा करेगी, जिसे हिन्दी माध्यम के छात्र-छात्राएं निरंतर महसूस करते रहे हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से सहयोग दिया उन सभी के प्रति बहुत आभार। समय साक्ष्य प्रकाशन के प्रति विशेष आभार, उनके बिना यह पुस्तक छात्रों तक न पहुँच पाती। इस पुस्तक के पुनर्लेखन एवं सामग्री संयोजन में मुझे हमेशा की तरह अपने पिता एवं शिक्षक प्रो. (डॉ.) आर.एस. विरमानी का सतत मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनके आशीर्वाद की हमेशा ही असीम आकांक्षा रहती है।

डॉ. कनुप्रिया

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

अनुक्रमणिका

1.	वणिकवाद (Mercantilism)	11
2.	प्रकृतिवाद (Physiocracy)	35
3.	एडम स्मिथ (Adam Smith)	65
4.	थॉमस रॉबर्ट माल्थस (Thomas Robert Malthus)	100
5.	डेविड रिकार्डो (David Ricardo)	125
6.	सिसमॉण्डी (Sismondi)	160
7.	सहयोगी समाजवादी अथवा सहयोगवाद (The Associative Socialist)	184
	लुई ब्लां (Louis Blanc)	186
	रॉबर्ट ओवन (Robert Owen)	191
	चार्ल्स फूरियर (Charles Fourier)	201
8.	जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill)	213
9.	फ्रेडरिक लिस्ट (Friedrich List)	236

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

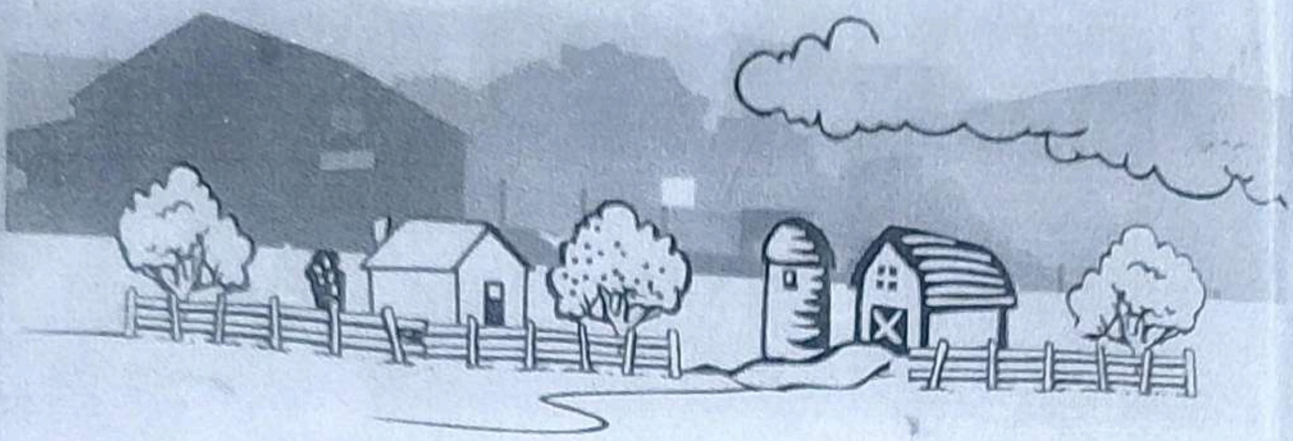

समकालीन परिदृश्य में
ग्रामीण विकास

डॉ. धनंजय शर्मा

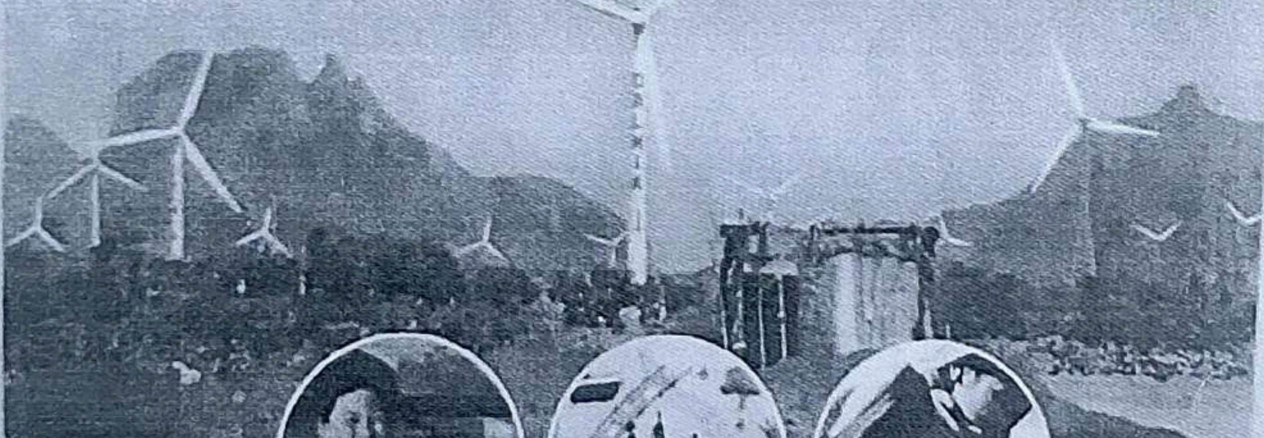

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

20230225_085343.jpg

Published by:
कुमुद पब्लिकेशन्स
के–129, 3½ पुस्ता मैन रोड,
गौतम विहार, दिल्ली–110053
फोन न० :– 9811281638, 9953918120
E-mail: kumudbooks@gmail.com

समकालीन परिदृश्य में ग्रामीण विकास

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण 2020

आई.एस.बी.एन: 978-81-947766-3-5

दिनेश कुमार यादव, कुमुद पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली–2 के लिए प्रकाशित एवं गुरपाल कम्प्यूटर्स, दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा सचिन प्रिंटर्स, मौजपुर, दिल्ली–53 में मुद्रित ।

https://mail.google.com/mail/u/0/#inbox?projector=1

1/1

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

7. ग्रामीण विकास में महिलाओं की सहभागिता 102
डॉ० मनीष मिश्र

8. महिला सशक्तिकरण के आयाम 108
डॉ० सत्यमित्र सिंह

9. ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका 116
श्री प्रभदीप सिंह

10. ग्रामीण विकास एवं महिला सशक्तीकरण 126
डॉ० प्रविता देवी

Hkx&ipe ¼xkehkfodkl ,oal pukik§ lkxdh½

11. सूचना तकनीक का ग्रामीण किसानो पर प्रभाव 134
डॉ० नीरज कुमार राय

12. ग्रामीण विकास में संचार एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका 147
डॉ० दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव

13. ग्रामीण विकास में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी 170
डॉ० प्रदीप कुमार जायसवाल

Hkx&'kVe~ ¼xkehkfodkl ,oavkRefuHkZj Hkjr½

14. ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण में कौशल विकास की सुविधा 183
डॉ० अंजनी प्रसाद दूबे

15. ग्रामीण भारत में नवाचार के प्रयोग में डिजिटल इंडिया की भूमिका 190
डॉ० कनुप्रिया

Hkx&lIre~ ¼xkehkfodkl ,oavkfFkZd oLFkk½

16. कोविड–19 के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था की चुनौतियों व अवसर का विष्लेशण 196
डॉ० अवनीष कुमार उपाध्याय, डॉ0 अमित अग्रवाल

Coordinator IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

14

ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण में कौशल विकास की भूमिका

डॉ० अंजनी प्रसाद दूबे[1]

साझी संस्कृति, सामूहिकता एवं सादा जीवन ग्राम्य जीवन का पर्याय रहा है। मानव समुदाय द्वारा पारम्परिक जीवन पद्धति का अनुसरण गाँवों को शहरों की आयातित आधुनिक जीवन शैली से अलग विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। वास्तव में मानव जीवन के विकास तथा प्रगति की प्रक्रिया के दो पड़ाव गाँव एवं शहर रूपी वास स्थलों के रूप में जाने जाते हैं। भौगोलिक अनुकूलताओं के कारण हमारे देश की उर्वरा भूमि यहाँ के निवासियों का भरण–पोषण करने में सदा से समर्थ रही है। भारत की 159.7 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि विविध प्रकार की फसलों की उत्पादन क्षमता से युक्त है। इसी कारण हमारा देश वर्तमान में दाल, जूट एवं दुग्ध उत्पादन में विश्व में अग्रणी स्थान रखता है।

देश की 833 मिलियन (68.85 प्रतिशत) आबादी यहाँ के 6 लगभग लाख गाँवों में निवास करती है। जो प्रधानतयः प्राथमिक कार्यों– कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, भेड़–बकरी पालन, वनोत्पाद संग्रह, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट पालन, इत्यादि कार्यो में संलग्न है।

---

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोलराजकीय महाविद्यालय, लक्सर, हरिद्वार

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

15

ग्रामीण भारत में नवाचार के प्रयोग में डिजिटल इंडिया की भूमिका

डॉ० कनुप्रिया[1]

"भारत गॉव में निवास करता है" इस कथन की सत्यता इस बात से ही स्पष्ट होती हैकि भारत की लगभग 66% कार्यकारी जनसंख्या भारत के गॉव में निवास करती हैऔर राष्ट्रीय आय में इस जनसंख्या का लगभग 46% का महत्वपूर्ण योगदान है। इस प्रकार देश के समावेशी विकास के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था की वृद्वि और विकास एक अनिवार्य शर्त है। भारत के ग्रामीण क्षेत्र आज भी शहरी क्षेत्रों की तुलना में कई मायनो में पिछडे हुए है, इसलिए शहर के साथ–साथ गॉव को भी नए दौर के साथ चलने के लिए डिजिटल दुनिया से जोडना आवश्यक ही नहीं आज के युग में अनिवार्य हो गया है। स्वतंत्रता के बाद से भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाये गए परन्तु कोई भी कार्यक्रम इतना अधिक प्रभावी नही बन सका कि वह ग्रामीण भारत के आधुनिकीकरण की नींव रख पाता । परन्तु 01 जुलाई 2015 को भारत सरकार द्वारा डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम प्रारंम्भ किया गया, जिसका मुख्य उदेश्य भारत को एक ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने और सभी के लिए सुशासन के साथ डिजिटल रुप से सक्षम

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर,अर्थशास्त्र विभाग राजकीय महाविद्यालय लक्सर हरिद्वार

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

2018-19

Prof. Suresh Mishra Felicitation Volume - 1

Society and Culture of India Through the Ages

युगयुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति

Chief Editor

Prof. Sanjay Swarnkar

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalay
Laksar (Haridwar)

© Editor

First Edition : 2019

ISBN : 978-81-942233-7-5

9788194223375

Radha Publications
4231/1, Ansari Road, Daryaganj
New Delhi-110002
Phone : 23247003, 23254306
Email : radhapub@gmail.com

Central Indian Historical Research Foundation
Gwalior, M.P

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Published by Nitin Garg for Radha Publications and printed by Asian Offset Press, Shahadra, Delhi-32

36. **Different Histories of 1857 in Hindi Writings: A Reflection** 351
Hitendra K Patel

37. **Literature and Women in Gujarat: Historical Perspectives** 384
Aruna Awasthi

38. **'Woman' as An Agent of Change? A Glance at Twentieth Century Gujarati Society** 392
Maitree Vaidya

39. **Contribution of Muslim Marathi Saint Poets For Social Harmony** 405
Mubaraque Quraishi

40. **Situating the History of Idea and Gender in the Cultural Purview in Pre-Colonial Bihar** 413
Sunita Sharma

41. **Socio-Cultural Aspects traced by the Bombay Guardian Weekly** 422
Neeta M. Khandpekar

42. **Macaulay, The Social Egalitarian and His IPC** 433
Ashootosh Sharan

43. **Calcutta and the Emigration of Labour in the Nineteenth Century** 443
Mukesh Kumar

44. **Girls' Education in Alwar Riyasat Upto 1938 : Building Roads to a Better Society** 459
Anuradha Mathur

45. **Train To Pakistan: Historiographic Construction of Socio-Cultural Nuances** 469
Charu Chitra

46. **Opium-The Black Gold- As an Important Source of Revenue in Princely State of Malwa** 477
Vinay Shrivastava

47. **Delving Into The Past – The Origin of Mask Culture** 485
Sharmila Chandra

48. **The Role of Bihari Women in the Upliftment of Untouchable** 49?
Jawahar Lal Verma

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Macaulay, The Social Egalitarian and His IPC

Dr. Ashootosh Sharan
Associate Professor of History
Government Degree College
Laksar, Haridwar
Uttarakhand
Mob. : 9634653044

"We must at present do our best to form a class who may be interpreters between us and the millions who we govern, a class of persons Indian in blood and colour, but English in taste, in opinions, in morals and intellect. To that class we may leave it to refine the vernacular dialects of the country, to enrich those dialects with terms of science.......to render them by degrees fit vehicles for conveying knowledge to the great mass of the population."[1]

"a single shelf of a good European library was worth the whole native literature of India and Arabia."[2]

"if our plans of education are followed up there will not be a single idolator among the respectable class in Bengal 30 years hence."[3]

These statements have been the key indicators in creating the image of Thomas Babington Macaulay and preserving it over the generations. What emerges from these statements is an individual displaying disdain for everything that is oriental in general and Indian in particular. Macaulay's minutes had hoisted the Indian educated class to clerk-dom in the Company and the 'Bhadralok'[4] clan of Bengal was expected to see a new enlightenment and change its religion to the like of the Missions. In later evaluations in history as well as literature, academic failures of India were often attributed to the mental block of slavery generated by the system imparted by the Macaulay minutes. Simultaneously, the global ignorance about the extraordinary cosmic and scientific achievements of the ancient Indians too was

Coordinator- IQAC/NAAC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं तथा समाधान

सम्पादक

अरविन्दनारायण मिश्र

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

प्रकाशक:

ध्यानी पब्लिकेशन

ज्वालापुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड (भारत)

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं तथा समाधान

© सर्वाधिकार लेखकाधीन / सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण 2019

आई.एस.बी.एन: 978-81-935727-6-4

सहयोग - श्री बी.एन. राय

तकनीकी सहयोग - डॉ. सुशील कुमार चमोली

Coordinator IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

37. Higher Education: its Challenges & Solutions 287
–*Snehal*

38. Language Teaching: Problems & Solutions 299
–*Rao Ragib Khan*

39. Early Medieval Haridwar 308
Ashootosh Sharan

Coordinator- IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

39

Early Medieval Haridwar

-*Ashootosh Sharan**

History has always been an important part of the human life and society. Human mind has been very keen to know how the ancestors lived, what were their pursuance and what were their achievements. These achievements used to find expression in the form of folklores. Tribal folks are most of this fashion. As the time progressed, folk was substituted by literature. And these literature would reflect about the most aspects of life. Literature of ancient times is replete with references to Haridwar. It had been one of the most fascinating places in the Sanatan literature as the Ganga descended here in the plains . It has been seen as a highway to salvation. The folks of Haridwar combined all the major aspects of Hinduism, Hari i.e. Vishnu, Har i.e. Shiva and Shakti i.e absolute power.

* Associate Professor of History, Government Degree College Laksar, Haridwar.

Coordinator-IQAC/NACC
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)

Principal
Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya
Laksar (Haridwar)